कैम्पस कनेक्ट

(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का मासिक समाचार बुलेटिन)

मई, 2026 वर्ष : 1, अंक : 10

प्रेरणा–स्रोत :
श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्रीमान योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :
प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श–मण्डल :
प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
डॉ. अश्विनी कुमार (कुलसचिव)
श्री दीनानाथ यादव (परीक्षा नियंत्रक)

सम्पादक :
प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह–सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक–मण्डल :
डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त–प्रबन्धन
श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :
श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश–272202
ईमेल
campus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट :www.suksn.edu.in
(सम्पादन–प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कुलपति–कथन

अनुपुब्बेन मेधावी थोक थोकं खणे खणे।
कम्मारो रजतस्सेव निद्धमें मलमत्तमे।।

धम्मपद के इस पद का अभिप्राय है– 'जिस प्रकार स्वर्णकार चाँदी के मैल को क्रमशः थोड़ा–थोड़ा प्रतिक्षण नष्ट करता है, उसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति प्रतिक्षण अपने मैल को थोड़ा–थोड़ा करके कमशः नष्ट करे।'

सोना–चाँदी बहुमूल्य धातुएँ हैं, जिनके प्रति मनुष्य का दुर्निवार आकर्षण है। इसका कारण है इनकी चमक, इनके गुण। सोने–चाँदी की कीमत उनकी शुद्धता से आँकी जाती है। जितनी अधिक शुद्धता इनकी होगी, उतना ही अधिक मूल्य होगा। मनुष्य की भी यही स्थिति है। मानव जीवन भी बहुमूल्य है, यहाँ तक कि यह अमूल्य ही है। परन्तु क्या जीवन की महत्ता सबकी समान है और क्या मूल्य या महत्ता का सम्बन्ध मात्र धन–दौलत से है। क्या अपने जीवन की महत्ता के कम या अधिक होने के लिये हम स्वयं उत्तरदाई नहीं हैं?

धन–दौलत का अपना मूल्य है, पर वास्तविक मूल्य व्यक्ति का उसके स्वभाव से है, व्यवहार से है, व्यक्तित्व से है, कार्य से है, उपलब्धि से हैं और उपयोगिता से हैं। हमारे यहाँ तो कहा गया है–

बड़ो भयो तौ का भयो, जैसे पेड़ खजूर।
पन्थी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।

तो, हमारा बड़प्पन हमारी उपयोगिता से है। मूल्य हमारा हमारी ऐसी उपलब्धियों से है जो दूसरों के अधिकतर काम आ सकें। स्वर्ण–रजत की ही भाँति मनुष्य का भी मूल्य उसकी शुद्धता से, उसके खरेपन से निर्धारित होता है। मनुष्य का खरापन उसके सद्गुणों में निहित है। बड़े–बड़े धनी–मानी धरती पर पैदा हुए, पर आज भी हम नाम जिनका जानते हैं वे कितने है? निश्चय ही गिने–चुने। कुबेर, अनाथपिण्डिक, भामाशाह जैसे दो–चार धनी–मानी व्यक्ति अमर हैं तो इसलिये कि उन्होंने अपने धन का सदुपयोग किया। परमार्थ कार्य में उसे लगाया, राष्ट्रहित में, समाजहित में व्यय किया। धन व्यक्ति के भीतर दुर्गुण लाता है, सामान्य मान्यता यह है। पर इन महापुरुषों ने अपने सद्गुणों से धन को भी सद्गुणी बना दिया।

भीतर–बाहर मनुष्य को चारों ओर से बुराइयाँ घेरे हैं। इन्ही से पार पाकर उसे अच्छा जीवन जीना है। मनुष्य के भीतर भी मैल भरे हैं। कोई दूसरा जाने या न जाने, पर व्यक्ति स्वयं अपने भीतर की वास्तविकता से भली–भाँति अवगत होता है। इसलिये उसके भीतर के मैल को कोई दूसरा दूर भी नहीं कर सकता। उसे यह कार्य स्वयं ही करना पड़ता है। दूसरे लोग सहायक हो सकते हैं, प्रेरणा बन सकते हैं, पर कार्य जिसका है उसी को करना पड़ता है। हम दूसरों में बुराई ढूँढ़ते रहते हैं, अपनी बुराई ढँके रहते हैं। कबीर कहते हैं–

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिल्या कोइ।
जौ दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोइ।

तो हम स्वयं अपने स्वर्णकार बन जायें और भगवान बुद्ध के कथनानुसार प्रतिक्षण अपने भीतर के मैल को ऐसे छाँटते चलें कि वह एक दिन रहे ही नहीं। यही हमारे जीवन की उपलब्धि होगी। यह हमारे परोपकारी बनने के लिये ही नहीं, स्व–उपकारी बनने के लिये भी आवश्यक है। हम अपनी कमियाँ पहचानते तो हैं, परन्तु मुख्य बात है उनको दूर करने की। यदि हम ऐसा कर पायें तो निश्चय ही हमारा जीवन एक अपूर्व कान्ति से भर उठेगा; जो न केवल हमारे लिये, अपितु अन्यों के लिये भी आनन्दकारी होगा।

–कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन, परमविद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

बुद्ध की करुणा, अहिंसा, प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति–पारावार,
ज्ञान का आलोक, मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा–प्रीति, गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन, परम निर्मल, पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का, आनन्द का, आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था, तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा,महाकरुणा,शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय, ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

(शब्द–रचना : अनन्त मिश्र)

राही रहे ठिठक क्यों पाँव!

(गीत)

राही रहे ठिठक क्यों पाँव!
है पथ से अनजान,
या फिर दूर बहुत है ठाँव?
लगता है तू भूल गया मग,
तभी डगमगाते तेरे पग,
मधुपायी से पैर डालता
बहता स्वेद–स्राव!
दो पग ही तो अभी बढ़ा है,
सारा मग तो तुझे पड़ा है,
उखड़ी साँस किनारे, क्या गति–
होगी बीच बहाव!
राह बहुत बतलाने वाले,
नहीं साथ पर जाने वाले,
आगे बढ़ साहस कर, मन में–
रखकर ऊंचे भाव!
बढ़ा चरण तेरा जो आगे,
समझ दूर संकट सब भागे,
होगा मार्ग प्रशस्त, देखकर–
तेरा उग्र स्वभाव !

जान लो

हम करेंगे कुछ बनेंगे,
मन में ऐसा ठान लो।
अपने अन्दर की छिपी,
सब शक्तियाँ पहचान लो।
एक भी यदि ईंट रहती–
है कहीं दुर्बल कभी,
तब नहीं मजबूत होती–
है इमारत जान लो।

–पराया

कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों की बैठक जनभवन, लखनऊ में सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह के नेतृत्व में विश्वविद्यालय से संबद्ध राजकीय एवं अनुदानित महाविद्यालयों के प्राचार्यों का एक प्रतिनिधिमंडल लखनऊ स्थित जनभवन में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय की कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में आयोजित समीक्षा बैठक में सहभागी हुआ। यह बैठक विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में शैक्षणिक गुणवत्ता के सुदृढ़ीकरण, मूल्यांकन एवं उच्च शिक्षा के समग्र विकास के उद्देश्य से आयोजित की गई।

बैठक में विशेष रूप से राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) के माध्यम से शैक्षणिक गुणवत्ता के आकलन, संस्थागत उन्नयन एवं निरंतर सुधार की प्रक्रियाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। कुलाधिपति ने प्राचार्यों के साथ संवाद करते हुए यह स्पष्ट किया कि NAAC केवल मूल्यांकन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि संस्थानों में गुणवत्ता संस्कृति विकसित करने का एक प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक महाविद्यालय को अपने आंतरिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए गुणवत्ता सुधार की दिशा में ठोस एवं परिणामोन्मुखी पहल करनी चाहिए।

अपने विस्तृत उद्‌बोधन में कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने कहा कि उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका केवल डिग्री प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को सक्षम, संवेदनशील एवं जिम्मेदार नागरिक बनाना भी उनका दायित्व है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि शिक्षण संस्थानों में शोध एवं नवाचार की संस्कृति को विकसित किया जाए, जिससे विद्यार्थी नई सोच के साथ समाज की समस्याओं के समाधान में योगदान दे सकें। इसके साथ ही उन्होंने कौशल विकास आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि विद्यार्थी रोजगारोन्मुखी बन सकें और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहभागी हों।

कुलाधिपति ने यह भी कहा कि शिक्षण संस्थानों को स्थानीय समुदाय के साथ समन्वय स्थापित कर सामुदायिक विकास की दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य तभी पूर्ण होता है, जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। इस संदर्भ में उन्होंने प्राचार्यों एवं शिक्षकों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे नेतृत्वकारी भूमिका निभाते हुए अपने संस्थानों को उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करें तथा विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य निर्माण में समर्पित भाव से कार्य करें।

बैठक के उपरांत कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने बताया कि यह बैठक अत्यंत सकारात्मक, उपयोगी एवं रचनात्मक रही। कुलाधिपति के मार्गदर्शन से सभी महाविद्यालय NAAC मूल्यांकन के प्रति और अधिक जागरूक एवं प्रेरित हुए हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की बैठकों का विशेष महत्व है, क्योंकि इनके माध्यम से प्राचार्यों एवं शिक्षकों को स्पष्ट दिशा–निर्देश प्राप्त होते हैं, जो सीधे तौर पर विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास एवं उनके उज्ज्वल भविष्य निर्माण में सहाय क सिद्ध होते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि

विश्वविद्यालय इस दिशा में सभी संबद्ध महाविद्यालयों के साथ समन्वय स्थापित कर गुणवत्ता सुधार के लिए निरंतर कार्य करता रहेगा।

इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अश्विनी कुमार एवं परीक्षा नियंत्रक श्री दीनानाथ यादव सहित प्रो. अरविंद कुमार सिंह, प्रो. बृजेश कुमार त्रिपाठी, प्रो. अभय श्रीवास्तव, प्रो. रीना पाठक,

प्रो. सुनीता त्रिपाठी, डॉ. अजय मिश्रा, डॉ. एस. पी. सिंह सहित अन्य सभी महाविद्यालयों के प्राचार्य उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में विद्यालय प्रधानाचार्यों के लिये कार्यशाला सम्पन्न

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु द्वारा 17 अप्रैल, 2026 को विद्यालयी नेतृत्व को सशक्त बनाने तथा शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी नवाचारों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "प्रौद्योगिकी, शिक्षा एवं अवसर' विषय पर विद्यालय नेतृत्वकर्ताओं के लिए नवाचार आधारित एक दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में किया गया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि वर्तमान समय में छात्रों को नई चुनौतियों एवं अवसरों के अनुरूप ढालना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता, नवाचार एवं तकनीकी समावेशन के माध्यम से ही विद्यार्थियों का समग्र विकास संभव है। प्राचार्यों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अवसरों एवं व्यापक संभावनाओं से अवगत कराना चाहिए, जिससे उच्च शिक्षा के लिए अनावश्यक पलायन को रोका जा सके। उन्होंने यह भी बताया कि विश्वविद्यालय का शुल्क अपेक्षाकृत कम है, जिससे अधिक से अधिक विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि विश्वविद्यालय से ऐसे विद्यार्थी तैयार होंगे जो कुशल होने के साथ–साथ पूर्णतः रोजगारोन्मुख भी होंगे।

आयोजन समिति की अध्यक्ष एवं विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो. प्रकृति राय ने विज्ञान संकाय के विभागों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि संकाय के शिक्षक न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, बल्कि राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर की विभिन्न शोध परियोजनाओं का सफल संचालन भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संकाय में शोध एवं नवाचार को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. नीता यादव ने विभागवार जानकारी देते हुए अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ एवं तथागत अतिथि–गृह आदि की विशेषताओं से अवगत कराया। वहीं वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सौरभ ने संकाय की उपलब्धियों को साझा करते हुए बताया कि वाणिज्य एवं प्रबंधन की शिक्षा को आधुनिक एवं रोजगारोन्मुख बनाया जा रहा है, जिसमें व्यावहारिक कौशल, उद्यमिता एवं डिजिटल दक्षता पर विशेष बल दिया जा रहा है।

कार्यशाला के प्रथम तकनीकी सत्र में भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. कौशलेंद्र चतुर्वेदी ने विश्वविद्यालय के परिचय, विजन, अकादमिक पारिस्थितिकी तंत्र एवं आउटरीच गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद चौबे ने "शिक्षा में तकनीक आधारित परिवर्तन एवं विद्यालय नेतृत्व की भूमिका" विषय पर व्याख्यान दिया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. हरीशकुमार शर्मा ने की।

द्वितीय तकनीकी सत्र में प्राणी विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव ने "डिजिटल टूल्स, ए. आई. एवं ब्लेंडेड लर्निंग" विषय पर विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि ए. आई. आधारित उपकरण शिक्षा को अधिक प्रभावी, व्यक्तिगत एवं सुलभ बना रहे हैं। सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल, सिद्धार्थनगर के प्राचार्य प्रतिनिधि अनूप पांडेय ने भी एआई टूल्स के उपयोग पर अपने विचार व्यक्त किए।

तृतीय तकनीकी सत्र में डॉ. अखिलेश दीक्षित ने उद्यमिता पर तथा डॉ. आशुतोष कुमार वर्मा ने विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों एवं अवसरों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव, डॉ. दीप्ति गिरी ए वं डॉ. कपिल गुप्ता ने संयुक्त रूप से किया, जबकि धन्यवाद–ज्ञापन संयोजक प्रो. हरीशकुमार शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अश्विनी कुमार, आयोजन सचिव प्रो. लक्ष्मण सिंह, अकादमिक अधिष्ठाता प्रो. जितेंद्र कुमार सिंह, हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. विनीता रावत, डॉ. रक्षा, डॉ. सरिता सिंह सहित समस्त शिक्षकगण एवं छात्र–छात्रा उपस्थित रहे। कार्यशाला में सिद्धार्थनगर जनपद के लगभग 92 सरकारी एवं गैर–सरकारी इंटरमीडिएट कॉलेजों के प्राचार्यगण ने सहभागिता की।

छात्राओं हेतु छात्रवृत्ति प्रोत्साहन कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 के निर्देशन में चलाए जा रहे विशेष अभियान के अंतर्गत दिनांक 17 अप्रैल, 2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, सिद्धार्थनगर में छात्रवृत्ति प्रोत्साहन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2023–24 एवं 2024–25 में स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को सम्मानित किया गया। छात्रवृत्ति वितरण कार्यक्रम में मुख्य रूप से शकीला खातून, उषा जायसवाल, अंतिमा शुक्ला, वर्तिका पांडेय, अक्षिता त्रिपाठी, आर्या सिंह, रोशनी जायसवाल, अंजू दुबे, साक्षी मिश्रा, मुस्कान एवं ज्योति पासवान को छात्रवृत्ति देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो० कविता शाह के कर–कमलों द्वारा मेधावी छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। अधि अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि बेटियों की शिक्षा एवं सशक्तीकरण ही समाज के समग्र विकास का आधार है। उन्होंने छात्राओं को निरंतर परिश्रम, आत्मविश्वास एवं उच्च लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र–छात्रा उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा त्रैमासिक संस्कृत–संभाषण कक्षा पूर्ण

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा कला संकाय में दिनांक 16 अप्रैल, 2026 को त्रैमासिक सरल संस्कृत–संभाषण कक्षा का समापन सत्र आयोजित किया गया। संस्कृत विभाग द्वारा वर्तमान शैक्षिक सत्र में संस्कृत दिवस (श्रावणी पूर्णिमा) को वार्षिकोत्सव के रूप मनाया गया, जिसके अन्तर्गत संस्कृत 28 अगस्त, 2025 को इस

त्रैमासिक संभाषण कक्षा का उद्घाटन किया गया था। सम एवं विषम सेमेस्टर के साथ–साथ त्रैमासिक सरल संस्कृत संभाषण कक्षा भी चलाई गयी। संस्कृत विभाग के लगभग 40 छात्रों तथा कुछ अन्य विभागों के छात्रों को इस कक्षा के दोनों त्रैमासिक सत्रों में संस्कृत में वार्तालाप से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं का शिक्षण प्रदान किया गया। जिसके माध्यम से छात्रों ने संस्कृत में वार्तालाप करने का अभ्यास किया। इसके साथ ही साथ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सिद्धार्थोत्सव कार्यक्रम में संस्कृत पाठशाला, संस्कृत वस्तु–प्रदर्शनी एवं 'मशकधानी' व्यंग नाटिका का संस्कृत के छात्रों द्वारा मंचन भी किया गया था।

समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद चौबे तथा विशिष्ट अतिथि हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. जयसिंह यादव रहे। अधिष्ठाता कला संकाय प्रोफेसर नीता यादव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उक्त कार्यक्रम का शुभारंभ देवी सरस्वती के चित्र पर अतिथियों द्वारा पुष्पार्पण कर किया गया। विभागीय छात्रों सपना, प्रेमकला, कुशल और आशीष कुमार के द्वारा सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि डॉक्टर सच्चिदानंद चौबे ने संस्कृत विभाग के छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक भारतवासी के हृदय में संस्कृत जन्म से विद्यमान है। हमारे सभी संस्कार और दैनिक व्यवहार एवं आचरण में इस भाषा का स्वरूप दिखलाई पड़ता है। उन्होंने छात्र–छात्राओं से आह्वान किया कि वे संस्कृत–संभाषण अवश्य सीखें, क्योंकि इस भाषा का पूरे विश्व में एक अलग सम्मान है। इस भाषा का व्याकरण बहुत ही समृद्ध एवं अनुशासित है।

विशिष्ट अतिथि डॉ० जयसिंह यादव ने अपना उद्बोधन संस्कृत भाषा से प्रारंभ किया और कहा कि संस्कृत विभाग ने संभाषण की कक्षा चलाकर जनमानस में व्याप्त संस्कृत भाषा की जटिलता–सम्बन्धी भ्रम को दूर किया है। छात्रों द्वारा संस्कृत में बातचीत करना इस बात का प्रमाण है कि संस्कृत विभाग के प्रभारी डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जी ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से इसके पाठ बिंदुओं को पढ़ाया। साथ ही साथ उनके अतिथि प्रवक्ता आनंद कुमार, ममता एवं डॉ. सुजाता यादव ने संस्कृत गीतों कथाओ एवं नाटकों का अभ्यास कराकर संस्कृत सीखने की जटिलता को बहुत ही आसान बना दिया। संस्कृत विभाग के छात्रों ने निश्चित रूप से संस्कृत विषय में अतिरिक्त दक्षता हासिल की है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. नीता यादव ने छात्रों को उत्साहित करते हुए कहा कि संस्कृत भाषा जिस प्रकार संस्कारित भाषा कही जाती है, उसी प्रकार आज संस्कृत के छात्र–छात्राओं ने अपने प्रदर्शन के माध्यम से इस भाषा के देववाणी के स्वरूप को प्रदर्शित किया है। आज इन छात्रों को संस्कृत में वार्तालाप करते हुए देखना एवं सुनना इस बात का प्रमाण है कि जनमानस में जिस प्रकार एक धारणा व्याप्त है कि संस्कृत भाषा बहुत कठिन है और बोलचाल में प्रयोग नहीं की जा सकती, इस सरल संस्कृत संभाषण कक्षा ने इस भ्रम को पूरी तरह से खारिज कर दिया है। मैं संस्कृत विभाग के प्रभारी डॉ धर्मेंद्र कुमार जी को एवं उनके सहयोगी शिक्षकों को बधाई देती हूं और आशा करती हूं कि वह आगे के भी सत्रों में इस प्रकार की कक्षाओं का अवश्य आयोजन करेंगे।

इसके पूर्व डॉ० धर्मेन्द्र कुमार प्रभारी संस्कृत विभाग ने समस्त अतिथियों का स्वागत करते हुए विषय प्रस्तावना प्रस्तुत की और कहा कि माननीय कुलपति प्रो० कविता शाह महोदया के मार्ग–निर्देशन में इस कक्षा का एक नया प्रयोग विभाग में किया गया जो कि सफल रहा। स्नातक के छात्र कुशल त्रिपाठी, आशीष कुमार और सानिया अंसारी ने संस्कृत में अपना अनुभव–कथन प्रस्तुत किया तथा संस्कृत में कई गीत प्रस्तुत किए। छात्रों द्वारा वैद्य–रोगी संभाषण भी मंच के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन अतिथि प्रवक्ता आनंद कुमार एवं आभार–ज्ञापन डॉ. सुजाता यादव के द्वारा किया गया। उक्त अवसर पर डॉ आभा द्विवेदी, ममता, रवि मद्धेशिया, साकेत मिश्रा तथा विभागीय छात्र–छात्रा उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में लोकगीत–गायन

महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तिकरण को केंद्र में रखते हुए उ . प्र. शासन द्वारा संचालित नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 के प्रचार अभियान के अंतर्गत माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह के नेतृत्व में चल रहे विविध कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिनांक 16.04.2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में लोकगीत गायन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। उक्त कार्यक्रम में नारी चेतना, नारी शक्ति, नारी सुरक्षा से संबंधित अनेक गीतों का गायन किया गया। यह कार्यक्रम मिशन शक्ति

फेज–5 की सह नोडल अधिकारी डॉ. रेनू त्रिपाठी के संयोजन में आयोजित हुआ। स्त्री–जागरण से सम्बन्धित प्रेरक गीतों की मधुर

प्रस्तुति द्वारा नारी की सामर्थ्य व सम्मान का महत्व बताते हुए उक्त कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न किया गया।

उक्त कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु की अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए नारी–शक्ति वंदन अधिनियम को शासन द्वारा महिला सुरक्षा व सम्मान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। मिशन शक्ति फेज 5 की नोडल अधिकारी प्रो. सुनीता त्रिपाठी ने कहा कि महिला अधिकारों के संरक्षण के लिए सर्वप्रथम महिलाओं द्वारा अपने संवैधानिक अधिकारों को जानना अनिवार्य है, तभी वे अपने विरुद्ध किसी भी अत्याचार का प्रतिकार कर सकेंगी।

इसके पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए कार्यक्रम की संयोजक डॉ.रेनू त्रिपाठी ने नारी–शक्ति वंदन अधिनियम के विषय में छात्र–छात्राओं को विस्तार से बताते हुए उन्हें शारीरिक व मानसिक रूप से सशक्त बनने एवं अपनी सामर्थ्य को पहचानने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर राजनीति विज्ञान विभाग की प्रभारी डॉ. सरिता सिंह ने भी सुंदर लोकगीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में मिशन शक्ति फेज–5 की सह नोडल अधिकारी डॉ. रक्षा, संस्कृत विभाग की सहायक आचार्य डॉ.आभा द्विवेदी, अतिथि प्रवक्ता डॉ. ममता आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

'चित्रकला अभिव्यक्ति कार्यक्रम' का आयोजन

भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार तथा शासन–प्रशासन के अन्तर्गत महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तीकरण को केंद्र में रखते हुए उत्तर प्रदेश शासन द्वारा संचालित नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 के प्रचार–प्रसार अभियान को अधिक प्रासंगिक बनाने के उद्देश्य से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में दिनांक 17.04.2026 को 'चित्रकला अभिव्यक्ति कार्यक्रम' का आयोजन किया

गया। विश्वविद्यालय की यशस्वी मुखिया, विलक्षण प्रतिभा की धनी माननीया कुलपति प्रो. कविता शाह के नेतृत्व में चल रहे विविध कार्यक्रमों की श्रृंखला के अन्तर्गत सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में नवाचार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चित्रकला अनुभाग, कला संकाय में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। उक्त चित्रकला अभिव्यक्ति कार्यक्रम में जितने भी चित्र बनाए गए वे सभी चित्र नारी वंदन अधिनियम को सार्थक बनाने के दृष्टिकोण से बनाए गए और वे सभी चित्र नारी चेतना, नारी शक्ति, नारी सुरक्षा, नारी शिक्षा, नारी सशक्तीकरण एवं नारी कौशल से संबंधित उद्देश्य को लेकर बनाए गए और उसी तरह के भाव प्रस्तुत कर रहे थे। चित्रकला अभिव्यक्ति कार्यक्रम का संयोजन एवं आयोजन कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ. सरिता सिंह द्वारा किया गया।

उक्त कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु की अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने छात्र छात्राओं को प्रेरित करने के साथ चित्रकला में और अधिक प्रासंगिक कार्य करते हुए नारी शक्ति वंदन अधिनियम को सार्थक बनाने हेतु सहयोग की अपेक्षा की। शासन द्वारा महिला सुरक्षा व सम्मान की दिशा में चलाए जा रहे उक्त कार्यक्रम नारी शक्ति वंदन अधिनियम को सार्थक रुप से प्रस्तुत करने में डॉ रेनू त्रिपाठी, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग ने चित्रकला अभिव्यक्ति कार्यक्रम को एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम को सार्थक बनाने में अपना सकारात्मक योगदान प्रदान कर रहीं मिशन शक्ति फेज–5 की नोडल अधिकारी प्रो. सुनीता त्रिपाठी ने कहा कि महिला अधिकारों के संरक्षण के लिए सर्वप्रथम महिलाओं द्वारा अपने संवैधानिक, शैक्षिक, मानवीय, सामाजिक, प्रशासनिक अधिकारों को जानना अनिवार्य है तभी वे अपने विरुद्ध किसी भी अत्याचार का प्रतिकार शाब्दिक , भाषिक, एवं चित्रकला के माध्यम से कर सकेंगी। चित्रकला हमारे भावनाओं की अभिव्यक्ति करने का एक अप्रत्यक्ष एवं संवेदनात्मक भाव को अभिव्यक्ति करने का कारक होती है । इन्होंने कहा कि चित्रकला अभिव्यक्ति का एक ऐसा माध्यम है जो बिना कुछ कहे बहुत कुछ कहने, समझने का संकल्प होता है। इसके पूर्व चित्रकला अभिव्यक्ति कार्यक्रम की शुरुआत में कार्यक्रम की सार्थकता बढ़ाने हेतु डॉ मनीषा वाजपेई, सहायक आचार्य भौतिक विज्ञान विभाग ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम के विषय में छात्र छात्राओं को विस्तार से बताते हुए उन्हें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक , आर्थिक रूप से सशक्त बनने एवं चित्रकारिता के माध्यम से अपनी सामर्थ्य को स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर चित्रकला अभिव्यक्ति कार्यक्रम में प्रत्येक संकाय,विभाग एवं अन्य कक्षाओं से संबंधित 50 से अधिक संख्या में छात्राओं ने सक्रिय सहभागिता प्रस्तुत की। उक्त चित्रकला अभिव्यक्ति कार्यक्रम अपने लक्ष्य एवं सार्थकता को बेहतर तरीके से स्थापित करने में सक्षम सिद्ध हुआ।

नशामुक्ति–शपथ कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 17.04.2026 को जनभावना की प्रेरणा से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में कुलपति प्रो. कविता शाह की अध्यक्षता में छात्र–छात्राओं के लिए नशामुक्ति–शपथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को नशीले पदार्थों के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए प्रेरित करना था।

कार्यक्रम का संयोजन अध्यक्ष छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव द्वारा किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों एवं उनके परिवारों को नशीले पदार्थों से दूर रहने के लिए प्रेरित करना तथा समाज में जागरूकता फैलाना है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को यह शपथ दिलाई गई है कि कि वे स्वयं नशे से दूर रहेंगे और अपने आसपास के लोगों को भी इसके दुष्परिणामों के बारे में जागरूक करेंगे। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि युवा शक्ति यदि संकल्पित हो जाए तो समाज से नशे जैसी कुरीतियों को समाप्त किया जा सकता है।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने अपने सन्देश में कहा कि नशा न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि उसके परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में भी बाधा उत्पन्न करता है। उन्होंने छात्रों से आह्वान किया कि वे अपने जीवन में सकारात्मक सोच अपनाएं, स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा दें और अपने साथियों को भी नशामुक्त रहने के लिए प्रेरित करें।

कार्यक्रम के दौरान सभी उपस्थित छात्र–छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से नशामुक्ति की शपथ ली और समाज को नशामुक्त बनाने के लिए हर संभव प्रयास करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, कर्मचारीगण एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्रा उपस्थित रहे। कार्यक्रम ने युवाओं में जागरूकता फैलाने और सकारात्मक संदेश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय कैडेट्स कोर द्वारा आत्म–सुरक्षा से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित किया गया

दिनांक 18.04.2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय कैडेट्स कोर (एन.सी.सी.) द्वारा नारी शक्ति वंदन के अंतर्गत आत्म–सुरक्षा (सेल्फ डिफेंस) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अधिष्ठाता, कला संकाय व छात्र–कल्याण प्रोफेसर नीता यादव ने कैडेट्स तथा अन्य छात्राओं को आत्म–सुरक्षा के विभिन्न बिंदुओं की जानकारी दी एवं विपरीत परिस्थितियों में सजग रहने तथा अपने अभिभावकों को सूचना देने की सलाह दी।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय केएन.सी.सी. ऑफिसर लेफ्टिनेंट डॉ. प्रज्ञेश नाथ त्रिपाठी ने कैडेट्स को आत्म–सुरक्षा के विभिन्न तरीकों से अवगत कराया एवं यह भी बताया कि हम विभिन्न परिस्थितियों को ध्यान में रखकर कैसे अपनी सुरक्षा कर सकते हैं। इस कार्यक्रम में कैडेट राजनंदनी एवं ज्योति ने विपरीत परिस्थितियों में सेल्फ डिफेंस का मॉक ड्रिल करके दिखाया। इस कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के शिक्षक, एन. एस. एस. के तीनों कार्यक्रम अधिकारी–कर्मचारी व कुल 25 एस. डबल्यू. व 5 एस. डी. एन.सी.सी. कैडेट्स ने प्रतिभाग किया।

विश्वविद्यालय की छात्राओं द्वारा स्कूटी–रैली निकाली गयी

उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देशन में चल रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिनांक 18.04.2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में मिशन शक्ति फेज–5 के संयोजन में छात्राओं द्वारा स्कूटी रैली निकाली गई। रैली को अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया तथा सभी प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर प्रो. नीता यादव ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन समाज में सकारात्मक संदेश देने के साथ–साथ छात्राओं में आत्मविश्वास एवं सुरक्षा के प्रति सजगता भी बढ़ाते हैं।

रैली का आयोजन प्रोफेसर डॉ. सुनीता त्रिपाठी, नोडल अधिकारी, मिशन शक्ति (चरण–5), रेनू त्रिपाठी एवं डॉ. रक्षा, सह–नोडल अधिकारी मिशन शक्ति (चरण–5) के मार्गदर्शन में किया गया।

इस अवसर पर डॉ. सुनीता त्रिपाठी ने अपने विस्तृत वक्तव्य में कहा कि मिशन शक्ति के अंतर्गत आयोजित यह स्कूटी रैली केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता का एक सशक्त माध्यम है। आज की छात्राएँ न केवल शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, बल्कि समाज में नेतृत्व की भूमिका भी निभा रही हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में अधिक भागीदारी का अवसर प्रदान करता है, जो एक सशक्त लोकतंत्र की पहचान है।

रैली के दौरान शालिनी पांडेय, शोभा, सुधा, नरगिस, मुस्कान, वर्तिका, अंशिका, शर्मिला, श्रुति, सुचेता, तृप्ति आदि ने स्कूटी रैली में

सक्रिय सहभागिता की। रैली में डॉ. विनीता रावत, डॉ. दीप्ति गिरी, डॉ. मनीषा बाजपेयी, डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. आभा द्विवेदी सहित अनेक शिक्षिकाएँ एवं छात्राएँ उत्साहपूर्वक शामिल रहीं।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में सेमेस्टर परीक्षाएं प्रारंभ

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए सत्र 2025–26 की सम सेमेस्टर परीक्षाएं दिनांक 21.04.2026 से विधिवत रूप से प्रारंभ हो गईं। इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने विश्वविद्यालय परिसर स्थित परीक्षा केंद्र का औचक निरीक्षण कर परीक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा आवश्यक दिशा–निर्देश दिए।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने अपने वक्तव्य में कहा कि विद्यार्थी–जीवन में परीक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह केवल अंक प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के ज्ञान, क्षमता एवं व्यक्तित्व का समग्र मूल्यांकन है। परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थी अपनी तैयारी का आकलन करते हैं, अपनी कमियों को पहचानते हैं तथा भविष्य की दिशा निर्धारित करते हैं।

उन्होंने कहा कि परीक्षा का सकारात्मक पक्ष यह है कि यह विद्यार्थियों में अनुशासन, समय–प्रबंधन एवं आत्मविश्वास का विकास करती है। यदि अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होता है, तो यह सुधार का अवसर प्रदान करती है, जिससे विद्यार्थी अगले प्रयास में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

कुलपति ने विद्यार्थियों को परीक्षा–भय (Exam Phobia) से दूर रहने की सलाह देते हुए कहा कि वे परीक्षा को बोझ या दबाव के रूप में न लें, बल्कि इसे अपने ज्ञान के प्रदर्शन के एक अवसर के रूप में देखें। सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास एवं संतुलित मानसिक स्थिति के साथ परीक्षा में सम्मिलित हों।

स्वास्थ्य के महत्व पर विशेष बल देते हुए उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन ही सफलता की कुंजी है। परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों को अपने खान–पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। हल्का, पौष्टिक एवं संतुलित आहार ग्रहण करें, अधिक मात्रा में पानी एवं तरल पदार्थों का सेवन करें, ताकि शरीर में ऊर्जा बनी रहे और गर्मी से बचाव हो सके। उन्होंने यह भी कहा कि विद्यार्थियों को पर्याप्त एवं गहरी नींद लेना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इससे स्मरण शक्ति एवं एकाग्रता में वृद्धि होती है। अनावश्यक तनाव से बचें, नियमित दिनचर्या बनाए रखें तथा स्वस्थ रहकर परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करें।

परीक्षा नियंत्रक श्री दीनानाथ यादव ने बताया कि सम सेमेस्टर परीक्षाओं के लिए विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों में कुल 234 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें कुल 2,04,351 परीक्षार्थी सम्मिलित हो रहे हैं। इनमें स्नातक स्तर पर लगभग 1,82,051 विद्यार्थी तथा स्नातकोत्तर स्तर पर लगभग 22,300 परीक्षार्थी परीक्षा में भाग ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि सभी केंद्राध्यक्षों को सुचितापूर्ण, व्यवस्थित एवं नकल–विहीन परीक्षा कराने हेतु विस्तृत दिशा–निर्देश जारी किए गए हैं, जिनका अनुपालन प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जा रहा है।

परीक्षा नियंत्रक ने आगे बताया कि विश्वविद्यालय परिसर स्थित प्रशासनिक भवन में एक केंद्रीय सीसी टीवी कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है, जहाँ से सभी परीक्षा केंद्रों की सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से तीनों पालियों में सघन निगरानी की जा रही है। उन्होंने निर्देश दिया कि परीक्षा प्रारंभ होने से पूर्व, परीक्षा के दौरान एवं परीक्षा समाप्ति के पश्चात तक सीसीटीवी कैमरे निरंतर संचालित रहें। किसी भी स्थिति में कैमरे बंद नहीं होने चाहिए। यदि किसी केंद्र पर इस संबंध में लापरवाही पाई जाती है, तो संबंधित परीक्षा केंद्र के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।

कुलसचिव डॉ. अश्विनी कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय एवं संबद्ध महाविद्यालयों में आयोजित परीक्षाओं का वातावरण सकारात्मक एवं अनुशासित होना चाहिए। उन्होंने केंद्राध्यक्षों, कक्ष निरीक्षकों एवं विद्यार्थियों से अपील की कि सभी मिलकर परीक्षा को शांतिपूर्ण एवं सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने में सहयोग करें।

उन्होंने कहा कि परीक्षार्थियों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना केंद्रों की जिम्मेदारी है तथा कक्ष निरीक्षक अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी सावधानी एवं निष्पक्षता के साथ करें। केंद्राध्यक्षों को निर्देशित किया गया कि वे निरंतर परीक्षा कक्षों का निरीक्षण करते रहें।

डॉ. अश्विनी कुमार ने यह भी कहा कि जितनी व्यवस्थित एवं पारदर्शी परीक्षा होगी, उतना ही यह विद्यार्थियों के भविष्य–निर्माण में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने स्वच्छता, अनुशासन एवं सकारात्मक वातावरण को परीक्षा की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक बताया।

परीक्षा–नियंत्रक एवं कुलसचिव द्वारा परीक्षा–केंद्रों का औचक निरीक्षण

विभिन्न संबद्ध महाविद्यालयों में परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव एवं कुलसचिव डॉ. अश्विनी कुमार द्वारा दिनांक 21.04.2026 को कई परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने केंद्राध्यक्षों एवं कक्ष निरीक्षकों को नकल–विहीन एवं सुचारु परीक्षा संचालन हेतु आवश्यक दिशा–निर्देश दिए।

विश्वविद्यालय प्रशासन ने सभी संबंधित अधिकारियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों से अपेक्षा की है कि वे अपने दायित्वों का पूर्ण निष्ठा एवं पारदर्शिता के साथ निर्वहन करते हुए परीक्षा को सफलतापूर्वक संपन्न कराएं तथा विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य निर्माण में अपना योगदान दें।

'डिजिटल साक्षरता एवं साइबर सुरक्षा' पर कार्यशाला का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय में 'मिशन शक्ति' के अंतर्गत एक कार्यशाला का आयोजन दिनांक 22.04.2026 (दिन–बुधवार) को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय में किया गया। शासन के निर्देशानुसार मिशन शक्ति विशेष अभियान फेज–5 के अंतर्गत 'डिजिटल साक्षरता एवं साइबर सुरक्षा' विषय पर आयोजित इस महत्वपूर्ण कार्यशाला में कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं विज्ञान संकाय की डीन प्रोफेसर प्रकृति राय ने छात्र–छात्राओं को सम्बोधित किया। उन्होंने वर्तमान समय में साइबर सुरक्षा की अनिवार्यता पर जोर देते हुए विद्यार्थियों को डिजिटल जगत में सतर्क और जागरूक रहने के लिए प्रेरित किया।

विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ० आशीष श्रीवास्तव (असिस्टेंट प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय) ने छात्र–छात्राओं को साइबर सुरक्षा के तकनीकी पहलुओं और इससे बचाव के व्यावहारिक तरीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

कार्यक्रम का प्रारंभ डॉ० दीपक जायसवाल के स्वागत उद्बोधन से हुआ, जिन्होंने मंच संचालन का दायित्व भी बखूबी निभाया। पूरे कार्यक्रम का कुशल प्रबंधन डॉ. किरन गुप्ता द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. अमरजीत यादव ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद–ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर नोडल अधिकारी डॉ० सुनीता त्रिपाठी, संयोजक डॉ० रेनू त्रिपाठी व डॉ० रक्षा सहित डॉ० विनीता रावत, डॉ० अंकिता श्रीवास्तव, डॉ० दीप्ति गिरी, डॉ० जय सिंह, डॉ० हफीज एवं अन्य शिक्षक व विद्यार्थी भारी संख्या में उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

मरने के बाद दो व्यक्ति जब यमलोक में प्रस्तुत किये गये तो उनमें से एक व्यक्ति को बताया गया कि आपने जीवन भर बहुत अच्छे कार्य किये हैं, परन्तु कुछ गलती आपसे हुई है, इसलिये आपको सत्कर्मों के कारण स्वर्ग तो मिला है, पर थोड़े पाप के कारण एक दिन का नरकवास भी प्राप्त हुआ है। अब आप बतायें कि आपको पहले कहाँ जाना है। व्यक्ति ने सोचा कि स्वर्ग में जाकर नरक आना बहुत कष्टकारी होगा। स्वर्ग में तो बाद में रहना ही है, अतः पहले नरक ही भोग लेता हूँ। आखिर एक ही दिन का तो है। उसके बाद तो आनन्द ही आनन्द है। उसकी इच्छानुसार उसे नरक भेज दिया गया।

दूसरे व्यक्ति को इसके उलट बताया गया कि आपने अपने जीवन में बहुत अपकर्म किये हैं, इसलिये आपको नरक भोगना पड़ेगा, परन्तु जाने–अनजाने आपने एक बहुत पुनीत कार्य भी किया है, जिसके परिणामस्वरूप आपको मात्र एक दिन के लिये स्वर्ग में रहने का अवसर प्राप्त हुआ है। आप बतायें कि पहले कहाँ जाना चाहेंगे? उस व्यक्ति ने सोचा कि नरक में तो सदैव के लिये रहना ही है, अतः क्यों न पहले स्वर्गभोग कर लिया जाये। नरक में जाने के बाद क्या पता यह लोग भूल ही जायें ओर फिर स्वर्ग जाने को ही न मिले। सो, वह अपनी इच्छा के अनुसार स्वर्ग पहुँच गया।

एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीन बीते...। दिन–पर–दिन बीतते गये। एक सप्ताह हो गया। न तो स्वर्ग वाले के पास कोई कहने को आया कि तुम्हारा यहाँ का समय पूर्ण हो गया, इसलिये अब तुम नरक जाओ। न ही कोई नरक वाले के पास आया कि तुमने अपनी सजा का एक दिन काट लिया, अब तुम स्वर्ग चलो।

स्वर्गवासी तो प्रसन्न था कि अच्छा हुआ, सब भूल गये। यद्यपि अन्दर से वह डरा हुआ था कि पता नहीं कब नरक के लिये बुलावा आ जाये। इसलिये किसी से पूछ नहीं रहा था कि क्या हुआ? बैठे–बिठाये क्यों मुसीबत मोल ली जाये? अगर भूलवश ऐसा हुआ है तो क्यों याद दिलाकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी जाये। पर, उधर नरक वाला बड़ा बेचैन! किसी तरह एक दिन बीता, फिर दो दिन बीते; तीसरे दिन से उसकी बेचैनी बढ़ने लगी। अपने प्रति हुए अन्याय के बारे में शिकायत करने के लिये उचित व्यक्ति और अवसर की सतत खोज में था, पर कोई हाथ ही नहीं आ रहा था। अन्ततः सातवें दिन एक जिम्मेदार अधिकारी हाथ आया, तो वह फट पड़ा। बड़े आक्रोशित स्वरों में उसने पूछा कि उसके साथ ऐसा अन्याय क्यों हो रहा है? एक दिन को कहा गया था, सात दिन बीत गये हैं और अभी तक वह नरक में ही जल रहा है। उसे वादे के अनुसार स्वर्ग क्यों नहीं भेजा रहा है?

इसके उत्तर में उसे जो बताया गया, उसे तो सुनकर उसके पैरों के नीचे की जमीन ही खिसक गयी। उसे कहा गया कि इसमें कोई भूल नहीं, बल्कि तुम्हारा आचरण उत्तरदाई है। जबसे तुम नरक में आये हो, तबसे तुमने इतने अपकर्म कर डाले हैं कि जिससे तुम्हारे पाप निरन्तर बढ़ते ही जा रहे हैं, इसी कारण से तुम्हारे नरकवास की अवधि भी लगातार बढ़ती जा रही है। यही कारण है तुम्हें स्वर्ग न भेजे जाने का।

दूसरी तरफ जब कई दिन बीत गये और धीरे–धीरे स्वर्गवासी का भय कुछ कम हो चला तो उसने इधर–उधर से घुमा–फिराकर टोह लेनी शुरू की। जब उसे लोगों से पर्याप्त सकारात्मक संकेत प्राप्त हो गये तब उसने पुष्टि के लिये स्वर्गाधिकारी से सीधे पूछा। उसे बताया गया कि जबसे वह स्वर्ग आया है, यहाँ के वातावरण के प्रभाव से ऐसा बदल गया है कि वह लगातार सदाचरण कर रहा है, जिसके कारण उसके पुण्य–खाते में लगातार वृद्धि हो रही है। यही कारण है कि उसे नरक नहीं भेजा जा रहा है। अगर वह ऐसे ही रहता रहा तो उसे कभी नरक नहीं भेजा जायेगा।

यह कथा क्या बताती है? कथा जीवन में सकारात्मकता और नकारात्मकता का महत्त्व समझाती है। हमारी वृत्ति चीजों के प्रति कैसी रहती है? चयन–दृष्टि कैसी रहती है? चयन का अवसर आने पर पहले हम क्या चुनते हैं? यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। उसी पर हमारा भविष्य बहुत हद तक निर्भर करता है। अगर कुछ अच्छा करने को थोड़े समय को भी मिल रहा है, अच्छा वातावरण, अच्छी संगति कुछ समय को भी प्राप्त हो रही है, तो हमें उस अवसर को गँवाना नहीं चाहिए। क्या पता उससे हमारे जीवन की दिशा हमेशा के लिये परिवर्तित हो जाये। संगति और वातावरण का जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। जीवन भर की साधना पर एक क्षण की गलती भारी पड़ सकती है। वहीं दूसरी तरफ कभी क्षण भर की संगति भी हमारे जीवन में बड़ा सकारात्मक बदलाव ला सकती है। इसलिये जब भी अवसर मिले, सदैव अच्छे की ओर झुकना चाहिए। जब भी मार्ग–चयन करना हो तो सदैव सन्मार्ग की ओर उन्मुख होना चाहिए।

वातावरण का हमारे जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है, यह स्वयंसिद्ध बात है। वातावरण लोग ही नहीं बनाते, हमारा अध्ययन भी बनाता है। वातावरण प्राकृतिक भी होता है और मानवीय भी। मानवीय वातावरण को ही प्रायः संस्कृति कहा जाता है। एक पाश्चात्य विद्वान ने संस्कृति की परिभाषा दी भी कुछ इसी तरह है। वह कहता है– 'संस्कृति पर्यावरण का मानव–निर्मित भाग है।' इस मानवीय वातावरण को रचने में साहित्य की भी बड़ी भूमिका है। सत्साहित्य का अध्ययन हमें सुसंस्कृत बनाता है और असत् साहित्य असंस्कृत ही नहीं, कुसंस्कृत तक बनाता है।

हमारी संस्कृति हमें समाज के सदस्य होने के नाते अनायास मिलती है। बचपन से आगे बढ़ते–बढ़ते युवावस्था तक हम कैसे सीखते–समझते और अध्ययन–अनुभव करते अपने समाज की संस्कृति में ढल जाते हैं, हमें पता भी नहीं लगता। पर समस्या तब होती है, जब हम हठात् संस्कृति छोड़ विकृति की ओर बढ़ने लगते हैं। हमारी संस्कृति हमें सिखाती है कि सकारात्मक बनो। अच्छे पथ का चयन करो। अच्छाई को ओर पहले कदम बढ़ाओ। पहले क्या सदैव ही अच्छे मार्ग की ओर बढ़ो। परन्तु जहाँ हम अपनी संस्कृति से च्युत होते हैं, वहीं पहले दूसरों की और बाद में अपनी हानि कराते हैं। फिर एक पल की गलती या गलत निर्णय हमें जीवन भर पछतावा देता है। यह कथा हमें यही बोध देती है।

अपराजिता : औषधीय और नृवंशविज्ञान–संबंधी महत्व

–प्रवीण कुमार मद्धेशिया एवं कपिल गुप्ता

अपराजिता (Clitoriaternate) एक उष्णकटिबंधीय पौधा है जो अपने कई उपयोगों और आकर्षक नीले फूलों के लिए जाना जाता है। फैबेसी परिवार से संबंधित यह पूरे एशिया, अफ्रीका और मध्य और दक्षिण अमेरिका में व्यापक रूप से वितरित होता है। सदियों से, कई संस्कृतियों में लोगों ने चिकित्सा उपचार में अपराजिता का उपयोग किया है। पौधे के औषधीय गुण इसमें फ्लवोनोइड्स, टैनिन्स, एंथोस्यानिंस, टरपेनोइड्स एवं अल्कॅलॉइड्स की प्रचुर मात्रा के कारण होते हैं। आधुनिक चिकित्सा के प्रतिकूल प्रभावों से लड़ने और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए, औषधीय जड़ी–बूटियों का उपयोग अक्सर एक विकल्प के रूप में किया जाता है। अपराजिता में पाए जाने वाले विभिन्न औषधीय यौगिकों के लाभों और उनके आणविक और जैव रासायनिक प्रभावों पर शोधपत्रों की संख्या में वृद्धि हुई है। इसलिए, उनके उपयोग के संबंध में सही निर्णय लेने के लिए, उनकी जैविक विशेषताओं, चिकित्सीय क्षमता और सुरक्षा की वैज्ञानिक जांच सहायक होगी। पारंपरिक औषधीय जड़ी–बूटियों से कई महत्वपूर्ण औषधियाँ और शारीरिक रूप से सक्रिय रसायन प्राप्त हुए हैं। पौधों के औषधीय गुण विविध हैं और इसमें जीवाणुरोधी, एंटीऑक्सिडेंट, कैंसर की रोकथाम, हाइपोलिपिडेमिक, श्वसन, हृदय, प्रतिरक्षा–मध्यस्थता, दर्दनाशक, सूजन–रोधी और ज्वरनाशक गुण शामिल हैं।

भारत, चीन, मध्य और दक्षिण अमेरिका और पूर्व और वेस्ट इंडीज के देश एशियाई उष्णकटिबंधीय तितली मटर या सी अपराजिता के रूप में जानी जाने वाली मान्यता प्राप्त प्रजातियों का घर हैं। सी. टर्नेटिया में प्रोटीन, एल्कलॉइड यौगिक, लिपोप्रोटीन ग्लाइकोसाइड्स, एंथोसायंस, स्टिग्मास्ट–4, एनी–3, 6–डायोन, वाष्पशील तेल, स्टेरॉयड, शर्करा, सैपोनिन, ट्राइटरपेनोइड्स, फिनोल, टैनिन, फ्लोबैटैनिन और फ्लेवेनॉइड्स सभी की पहचान की गई थी। कीटनाशक, प्रकृति में रोगाणुरोधी, कैंसर से

लड़ने वाली, प्रकृति में सूजन–रोधी, ज्वरनाशक, एनाल्जेसिक, मधुमेह–विरोधी, तंत्रिका तंत्र और हाइपोलिपिडेमिक गुण पौधे के ज्ञात औषधीय गुणों में से हैं। अपराजिता के अलग–अलग स्थानीय नाम हैं, जैसे– हिंदी में हम अपराजिता कहते हैं, संस्कृत में हम गिरिकर्णिका और विष्णुकांता कहते हैं और अंग्रेजी में हम ब्लू–पी, ब्लूबेल वाइन, बटरफ्लाई–पी, डार्विन–पी और कॉर्डोफैन पी कहते हैं। अपराजिता के फूलों को 'शंखपुष्पी' कहा जाता है, क्योंकि वे संस्कृत में शंख के समान होते हैं।

इस पौधे को एक महान मेध्य–रसायन माना जाता है, और इसके अर्क का उपयोग तंत्रिका संबंधी बीमारियों और मासासिका रोग के मानसिक विकारों के इलाज के लिए किया जाता है। शहद और घी के अलावा, सामान्य टॉनिक के रूप में बच्चों को जड़ें दी जाती थीं, जिससे उनका रंग निखारने के साथ–साथ उनकी बौद्धिक और शारीरिक शक्ति में भी सुधार होता था। पागलपन और मिर्गी के इलाज के लिए भी जड़ों का प्रयोग किया जाता था। फूलों के अर्क और उसके रसदार तरल का उपयोग साँप के काटने के इलाज के लिए किया जाता था। बीजों का उपयोग जोड़ों के दर्द के इलाज के लिए भी किया जाता है और मूत्र–संबंधी समस्याओं के इलाज के लिए कुचले हुए बीजों का गर्म या ठंडे पानी के साथ सेवन किया जाता है। अल्जाइमर रोग के इलाज के लिए अपराजिता की प्रभावशीलता की जाँच की गई, साथ ही मुख्य बायोएक्टिव घटक जो गतिविधि का कारण बनता है, की भी जाँच की गई।

अपराजिता का विभिन्न औषधीय गतिविधि और निष्कर्षण विधियों के साथ एक औषधीय जड़ी बूटी के रूप में अध्ययन किया गया था। फार्मास्युटिकल उद्योग पारंपरिक चिकित्सा से संभावित सुरागों की जांच करके पौधों से नई दवाएं बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। सी. टर्नेटिया को कई प्रकार की औषधीय क्रियाओं से जोड़ा गया है, जिनमें एंटीलेप्रोसी, एंटी–इंफ्लेमेटरी, एंटीहेल्मिंटिक, इम्यूनोमॉड्यूलेटरी, एंटीस्थमैटिक, एंटीडिप्रेसेंट, एंटीकॉन्वेलसेंट, एनाल्जेसिक, एंटीपायरेटिक, एंटीफंगल, प्रोटियोलिटिक और एंटीहाइपरलिपिडेमिक प्रभाव शामिल हैं। इस कार्रवाई का श्रेय कई महत्वपूर्ण पादप घटकों को दिया गया। पौधे पर वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार, अपराजिता में जैविक क्षमता की एक विस्तृत श्रृंखला है। अपराजिता के बायोएक्टिव सेकेंडरी मेटाबोलाइट्स, जैवउपलब्धता, फार्माकोकाइनेटिक्स और चिकित्सीय अध्ययन सहित चिकित्सीय मूल्य के बारे में जानकारी की गुणवत्ता खराब है। समवर्ती रूप से, अपराजिता के कार्बनिक और जलीय अर्क का उपयोग भविष्य में फार्मास्युटिकल उद्योग के लिए लाभप्रद फाइटोकेमिकल घटकों के स्रोत के रूप में किया जा सकता है।

(जैव–प्रौद्योगिकी विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु)

है प्रेम जगत् का सार

–प्रो. हरीशकुमार शर्मा

प्रेम और शक्ति दो सर्वथा भिन्न चीजें हैं। शक्ति मद उत्पन्न करती है और प्रेम मदमोचन है। शक्ति के बल पर किसी को परास्त तो किया जा सकता है, जीता नही जा सकता। यह प्रेम ही है, जो दूसरों को आपका वशवर्ती बनाता है। शक्ति जब प्रेम में समाहित हो जाती है तो विशिष्ट हो जाती है। प्रेम की शक्ति वह विशिष्ट शक्ति है जो दूसरों के हृदयों में आपकी विजयिनी मूर्ति चित्रांकित करती है। साधारण जीव–जगत् की तो बात ही क्या, जब भगवान तक प्रेमाधीन है। लेकिन यह करना इतना आसान नहीं। प्रेम का पंथ महाकराल है। उस पर चलकर उद्दिष्ट तक पहुँचने के बीच अन्तः संघर्षों से जीत सुनिश्चित कराने वाली जिस महाशक्ति की आवश्यकता होती है, वह आपकी आत्मा के अन्दर गहरे पैठी हुई होती है। उसे निकालकर उपयोग में लाना कठिन अवश्य है, असम्भव नहीं। प्रेम के सर्वोच्च शिखरस्थ परमात्मा के मन्दिर तक अहं–बल से नहीं, श्रद्धा और आस्था के जयघोषों के सहारे पहुँचा जाता है। सहयोग के स्तम्भों पर टँगे हुए सहानुभूति के तारों पर प्रवहमान आस्था की विद्युत से प्रकाशित होने वाले श्रद्धा और विश्वास के बल्ब से ज्योतित प्रेम के प्रकाश में हृदयस्थ परमात्मा के दर्शन किये जा सकते हैं।

आप चाहे आकाश में जीवन की खोज करें या पाताल में रहने का ठिकाना ढूँढे; हवा में उडें, चाहे पानी पर तैरें; पृथ्वी पर रहें या आधे स्वर्ग; सोने के ग्रास खायें, चाहे समुद्र से आविर्भूत चतुर्दश रत्नों में से एक पियें– यदि आपके हृदय में प्रेम का सागर हिल्लोलित नहीं होता; जीवन में त्याग, सहयोग एवं सहानुभूति की त्रिवेणी कलनाद नहीं करती तो आपका जीवन निस्सार है, श्रीविहीन है, नीरस है, व्यर्थ है। वे जो क्षीरसागर का क्षीरपान करने वाले हैं, वे जिन्हें पानी सहज सुलभ है और वे जो ओस चाटकर जीने हैं– जब तक इन तीनों में आत्मिक समत्व और एकत्व की रोशनी नहीं जगमगाती, तब तक विश्व में स्थायी शान्ति और सुख की बातें छलावा है., ढोंग हैं, आडम्बर हैं। वे जो धरा पर रेंग रहे हैं, घिसट रहें हैं, एक–एक इंच करके जिनका जीवन जैसे–तैसे सरक रहा है, जब तक उनके अन्दर मुनष्यता की पहचान नहीं की जायेगी, उन पर मानव की मानवता द्रवित नहीं होगी, तब तक मानव–मानव में एकता की बात करना बेमानी है। विश्व में स्थायी शान्ति आणविक विस्फोटों की प्रचण्ड ज्वाला से नहीं, प्रेम की शीतल–स्निग्ध धारा से आ सकती है। प्रेमामृत धारा ही संसार को अमरत्वमय नवजीवन प्रदान कर सकती है। जीवन के कूलों पर प्रेम–तरंगिणी अनवरत केलि करेगी, तभी जगत् का प्रांगण स्थायी शान्ति, सुख और समृद्धि की हरीतिना से परिपूर्ण होगा।

अज्ञानान्धकार मानवता के चिर–शत्रु हैं। ये बहुरूपिये हैं जो पराभूत होकर भी बार–बार नवन्नव रूपों में आकर टकराते हैं। मानवता का उनसे संघर्ष शाश्वत है। इनसे जूझकर इन पर अन्तिम और निर्णायक विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यकता है सम्पूर्ण मानवता के समन्वित संघर्ष की, जो प्रेम के व्यापक प्रसार से ही सम्भव है। प्रेम का आकर्षण ही ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित हृदयों को, अज्ञान के अन्धकार में डूबे हृदयों तक, ज्ञान की ज्योति ले जाकर उससे उन्हें जगमगाकर, मन, बुद्धि एवं आत्मा पर छायी तमिस्रा को हटाकर एक अभिनव जीवन एवं जगत् में प्रवेश कराने को ले जा सकता है। ।

प्रेम जगत् का सार है। जीवन का सर्वस्व है। समर्पण का आधार है। संसार प्रेमाश्रित है। इसमें प्रेम है, इसीलिए इसका अस्तित्व है। जिस दिन प्रेम न रहेगा, यह नष्ट हो जायेगा। जीवन का सबसे बड़ा सहारा प्रेम है। इसके अभाव में मनुष्य की संसार के प्रति आसक्ति भी समाप्त हो जाती है। प्रेम का स्रोत ही जीवन को जीवन बनाये रखता है। यह स्रोत सूख जाने पर जीवन भी सूख जाता है। प्रेम, वह भावना है कि जिसके वशीभूत होकर प्रेमी सर्वस्व अर्पण करने के उपरान्त भी समझता है कि जैसे उसने कुछ दिया ही नहीं और पाने वाला समझता है मानो उसने सब कुछ पा लिया। किसी से लेने और देने को प्रेम से उत्तम वस्तु जगत् में दूसरी नहीं। प्रेम वह शक्ति है जो मानव को दानवता के गर्त से उबारकर मानवता के धरातल और फिर उससे भी ऊपर उठाकर देवत्व के शिखर तक ले जाती है। प्रेम सबसे बड़ी शिक्षा है। 'प्रेम' नामक इस ढाई अक्षर के शब्द में इतना ज्ञान भरा हुआ है कि दुनिया के सभी महाग्रन्थों को मिलाकर निचोड़ने से भी नहीं मिलेगा। जिसने 'आपहु' और 'औरन' को शीतल करने वाले इस 'प्रेम के ढाई आखर' को पढ़ लिया, वह पण्डित हो गया। उसने सब कुछ जान लिया और जो इस तुच्छ से प्रतीत होने वाले 'प्रेम' शब्द के महत् मर्म को नहीं समझ सका, तो उसने सब कुछ पढ़कर भी कुछ नहीं पढ़ा। उसकी सारी शिक्षा व्यर्थ हो गयी। वह अज्ञानी का अज्ञानी रह गया।

प्रशान्त विश्व–सरोवर में सभ्यता का नूतन सरसिज सरसाये और यह सदैव सरसाता–लहराता रहे, उसके लिए आवश्यक है कि विश्व–सरोवर प्रेम के निर्मल और पवित्र जल से चिरापूर्ण रहे। यह सम्भव तभी हो सकेगा, जबकि सम्पूर्ण संसार तुलसी की वाणी के इस मर्म को समझ लेगा और अमल में लायेगा–

हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम ते प्रगट होइ मैं जाना।।

तभी संसार तुलसी के स्वर में स्वर मिलाकर उनकी इस चौपाई को गाते हुए व्यवहार में ला सकेगा–

सीयराममय सब जग जानी।
करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

(साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'तुलसी–साहित्य का आधुनिक सन्दर्भ' से)

'साइबर सुरक्षा, डिजिटल अरेस्ट एवं डिजिटल फ्रॉड' विषय पर वेबिनार

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के विज्ञान संकाय में दिनांक 23 अप्रैल 2026 को 'मिशन शक्ति फेज–5' के अंतर्गत 'साइबर सिक्योरिटी, डिजिटल अरेस्ट एवं डिजिटल फ्रॉड' विषय पर एक महत्वपूर्ण वेबिनार का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो० कविता शाह के संरक्षण में संपन्न हुआ तथा इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ० अश्विनी कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही। साथ ही अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो० नीता यादव की भी विशेष उपस्थिति रही।

वेबिनार में जनपदीय साइबर सेल, सिद्धार्थनगर (उ० प्र० पुलिस) के श्री अतुल चौबे मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम नोडल अधिकारी प्रो० सुनीता त्रिपाठी, संयोजक डॉ० रेनू त्रिपाठी एवं डॉ० रक्षा के निर्देशन में संपन्न हुआ, जबकि कार्यक्रम का संचालन डॉ० कपिल गुप्ता द्वारा किया गया। आयोजन में डॉ० अंकिता श्रीवास्तव का भी सराहनीय योगदान रहा।

अपने उद्बोधन में मुख्य वक्ता श्री अतुल चौबे ने कहा कि वर्तमान डिजिटल युग में साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं और अपराधी नए–नए तरीकों से लोगों को ठगने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने 'डिजिटल अरेस्ट' जैसी नई धोखाधड़ी तकनीकों के बारे में बताते हुए स्पष्ट किया कि अपराधी स्वयं को पुलिस या सरकारी अधिकारी बताकर लोगों को भयभीत करते हैं और उनसे धन की माँग करते हैं, जबकि वास्तविकता में ऐसी कोई कानूनी प्रक्रिया ऑनलाइन नहीं होती। उन्होंने प्रतिभागियों को सचेत करते हुए कहा

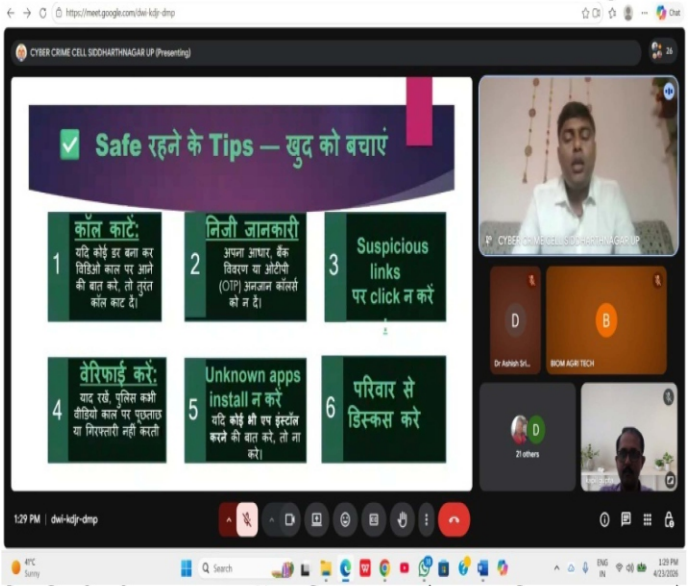

कि किसी भी अनजान कॉल, लिंक या संदेश पर बिना सत्यापन के विश्वास न करें तथा अपने बैंकिंग विवरण, ओटीपी और व्यक्तिगत जानकारी किसी के साथ साझा न करें। उन्होंने यह भी जोर दिया कि साइबर सुरक्षा केवल तकनीकी विषय नहीं, बल्कि जागरूकता और सतर्कता का विषय है, और प्रत्येक नागरिक को डिजिटल माध्यमों का उपयोग करते समय जिम्मेदारी एवं सतर्कता बरतनी चाहिए।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकगण डॉ० आशीष एवं डॉ० सरिता, डॉ० अमित, डॉ० किरण, डॉ० जयसिंह यादव, डॉ० दीप्ति, डॉ० विनीता, डॉ० हरेंद्र, शोधार्थी वर्तिका, शालिनी, अनुराधा, अंजलि, श्रेया, दिव्यांशु एवं छात्र–छात्राओं ने बड़ी संख्या में सहभागिता की और साइबर सुरक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कीं। कार्यक्रम के अंत में डॉ० मयंक कुशवाहा द्वारा धन्यवाद–ज्ञापन प्रस्तुत किया गया, जिसमें सभी अतिथियों, वक्ताओं एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

'तत्त्वमसि' पर हाइब्रिड मोड में परिचर्चा

दिनांक 23.04.2026 को विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय साहित्य परिषद, गोरक्षप्रान्त द्वारा श्रीधर पराडकर की महत्वपूर्ण कृति 'तत्त्वमसि' पर हाइब्रिड मोड में एक गरिमामयी सांध्यकालीन परिचर्चा का आयोजन सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में किया गया। कार्यक्रम में विद्वानों ने पुस्तक के दार्शनिक, आध्यात्मिक तथा राष्ट्र–निर्माण संबंधी विविध आयामों पर गंभीर एवं सारगर्भित विचार व्यक्त किये तथा 'तत्त्वमसि' को एक ऐसी प्रेरणादायक कृति बताया, जो आत्मबोध, सामाजिक चेतना और राष्ट्र निर्माण के मूल्यों को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की गोरक्षप्रान्त इकाई के अध्यक्ष प्रो. हरीशकुमार शर्मा ने कहा कि 'तत्त्वमसि' केवल एक दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन को उन्नत बनाने वाली एक प्रेरक कृति है। उन्होंने बताया कि पुस्तक में चित्रित विभिन्न पात्रों, जैसे– स्नेहल, परितोष जी, संजय कपूर, सदानन्द, महेश बाबू एवं अन्य स्वयंसेवकों के माध्यम से त्याग, अनुशासन, सेवा और आत्मबोध का मार्ग प्रशस्त होता है।

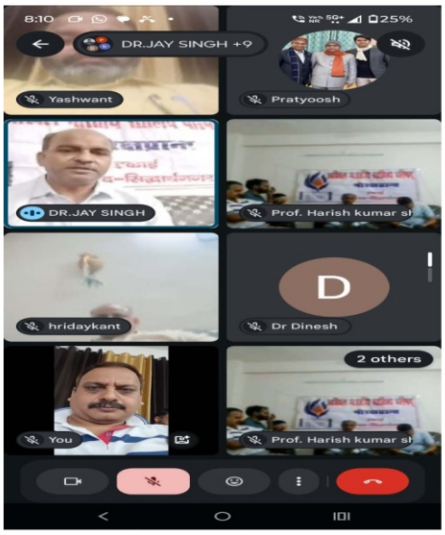

लेखक श्रीधर पराडकर ने इन पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि संगठन राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने विशेष रूप से उल्लेख किया कि संघ के स्वयंसेवक व्यक्तिगत सुख–सुविधाओं एवं इच्छाओं का त्याग कर सेवा–भाव से राष्ट्र निर्माण में निरंतर संलग्न रहते हैं। अनेक अवसरों पर उन्हें अपमान एवं आलोचना का सामना करना पड़ता है, फिर भी वे अहर्निश राष्ट्रहित में कार्य करते रहते हैं। इन पात्रों के माध्यम से समाज को समर्पण, त्याग और राष्ट्रसेवा का सशक्त संदेश मिलता है।

ऑनलाइन जुड़े मुख्य वक्ता अखिल भारतीय साहित्य परिषद, गोरक्षप्रान्त के उपाध्यक्ष तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के आचार्य प्रत्यूष दुबे ने कहा कि 'तत्त्वमसि' में विषयवस्तु और पात्रों के माध्यम से गहन जीवन–मूल्यों का अत्यंत प्रभावी प्रस्तुतीकरण किया गया है। उन्होंने बताया कि लेखक ने दार्शनिक तत्वों को केवल सिद्धांत रूप में नहीं रखा, बल्कि पात्रों के जीवन, संघर्ष और अनुभवों के माध्यम से उसे सजीव बनाया है। पुस्तक में आत्मबोध, कर्तव्यनिष्ठा, राष्ट्रप्रेम और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विषय अत्यंत सशक्त रूप में उभरकर सामने आते हैं। इन पात्रों के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि व्यक्ति का वास्तविक विकास तभी संभव है, जब वह अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के व्यापक हित में कार्य करे।

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ से आनलाइन जुड़े अखिल भारतीय साहित्य परिषद, लखनऊ प्रान्त के महामंत्री विशिष्ट वक्ता डॉ. बलजीत श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'तत्त्वमसि' आत्मज्ञान और सामाजिक चेतना का

अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। यह कृति पाठकों को आत्मचिंतन के साथ–साथ समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का बोध कराती है तथा वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में महामन्त्री डॉ. राम पांडेय ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि 'तत्त्वमसि' जैसी कृतियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रचेतना को समझने का सशक्त माध्यम हैं। अंत में डॉ. हृदयकांत पांडेय ने सभी अतिथियों, वक्ताओं एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया और कार्यक्रम के सफल आयोजन में सभी के सहयोग की सराहना की।

कार्यक्रम का सफल संयोजन डॉ. जय सिंह यादव द्वारा किया गया, जिनके कुशल संचालन में परिचर्चा सुव्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से संपन्न हुई। इस अवसर पर प्रो. सत्येंद्र दुबे, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. दिनेश प्रसाद, डॉ. शिवम शुक्ला, डॉ. यशवंत यादव, डॉ. मयंक कुशवाहा, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, अतुल उपाध्याय सहित अनेक शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों का भ्रमण

अगले माह 1 मई, 2026 को मनाए जाने वाले गुजरात स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश राजभवन सचिवालय के निर्देशानुसार प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत "सीमावर्ती क्षेत्र का भ्रमण" कार्यक्रम के तहत दिनांक 28 अप्रैल, 2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की एक टीम द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों का भ्रमण किया गया।

इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के लगभग 60 से अधिक छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने सीमावर्ती गाँवों का दौरा किया तथा विशेष रूप से एस. एस.बी. कैम्प का अवलोकन किया। विद्यार्थियों ने ग्रामीणों से मुलाकात की तथा अलीगढ़ नेपाल सीमा बॉर्डर एवं खुनवा नेपाल सीमा बॉर्डर पर आवागमन कर रहे लोगों से संवाद स्थापित किया। इस दौरान भारत एवं नेपाल के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों, आपसी सहयोग तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक निकटता पर भी सार्थक चर्चा की गई।

इस अवसर पर पूर्व अधिष्ठाता कला संकाय एवं पूर्व अधिष्ठाता,

छात्र कल्याण प्रो. हरीशकुमार शर्मा ने उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए कहा कि सीमावर्ती क्षेत्र का यह भ्रमण विद्यार्थियों को देश की भौगोलिक, सामाजिक एवं सुरक्षा व्यवस्था को समझने का सशक्त अवसर प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक संवेदनशीलता एवं कर्तव्यबोध का विकास होता है। साथ ही उन्होंने विभिन्न राज्यों की संस्कृति, परंपराओं एवं जीवनशैली को जानने और उनसे प्रेरणा लेने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम में हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे ने भी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के अनुभवात्मक भ्रमण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व–विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा उन्हें देश की विविधता और सीमावर्ती जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराते हैं।

इस भ्रमण यात्रा में लगभग 40 किलोमीटर के सीमावर्ती क्षेत्र का अवलोकन किया गया। कार्यक्रम में विशेष रूप से डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. हृदयकांत पांडेय, डॉ. जय सिंह यादव, डॉ. रविकांत शुक्ला,

डॉ. यशवंत यादव, डॉ. मुन्नू खान, डॉ. अब्दुल हफीज एवं डॉ. धर्मेंद्र, डॉ अविनाश, रोहित, सोहरत आदि शिक्षकों एवं कर्मचारियों सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं ने सक्रिय सहभागिता की।

यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण शैक्षिक अनुभव के साथ–साथ सीमावर्ती जीवन, भारत–नेपाल संबंधों एवं सामाजिक समन्वय को समझने का प्रभावी माध्यम सिद्ध हुआ।

विश्वविद्यालय की टीम द्वारा व्यापक जनसंपर्क कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश राजभवन सचिवालय के निर्देश के क्रम में कुलपति प्रो. कविता शाह के मार्गदर्शन में दिनांक 30 अप्रैल को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में गुजरात दिवस कार्यक्रम श्रृंखला के अन्तर्गत एक व्यापक जनसंपर्क एवं सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य "एक

भारत, श्रेष्ठ भारत" की भावना को सुदृढ़ करते हुए विश्वविद्यालय एवं समाज के बीच समन्वय को और मजबूत करना रहा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में विविध जनहितकारी गतिविधियों का संचालन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा पूर्व में गोद लिए गए टीबी (क्षय रोग) मरीजों के घर जाकर उनके स्वास्थ्य एवं कुशलक्षेम की जानकारी प्राप्त की गई। संबंधित शिक्षकों ने मरीजों से संवाद स्थापित करते हुए उनके उपचार, पोषण एवं जीवनशैली से जुड़े पहलुओं पर चर्चा की तथा उन्हें संतुलित आहार, नियमित दवा सेवन एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। साथ ही आवश्यक सहयोग भी प्रदान किया गया।

इसी क्रम में विश्वविद्यालय की टीम ने ग्रामीण क्षेत्रों में कुम्हार समुदाय द्वारा बनाए जा रहे मिट्टी के बर्तनों का अवलोकन किया। कारीगरों से बर्तन निर्माण में आ रही समस्याओं को गंभीरता से सुना गया तथा उन्हें आश्वस्त किया गया कि उनके सहयोग हेतु विश्वविद्यालय स्तर से शासन तक आवश्यक प्रयास किए जाएंगे, जिससे स्थानीय शिल्प को प्रोत्साहन मिल सके।

कार्यक्रम की श्रृंखला में विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य विभाग द्वारा भी महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। इस दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम ने ग्रामीणों को स्वास्थ्य एवं टीकाकरण से संबंधित जानकारी प्रदान की तथा बढ़ती गर्मी से बचाव के उपाय बताए। ग्रामीणों को पर्याप्त जल सेवन, संतुलित आहार एवं स्वच्छ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

इस कार्यक्रम का नेतृत्व अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रोफेसर नीता यादव द्वारा किया गया। उनके साथ डॉ. सरिता सिंह, डॉ अरविंद रावत सतीश राजकमल सुयस संतोष सहित अन्य शिक्षक एवं कर्मचारी सक्रिय रूप से सहभागी रहे।

कार्यक्रम के माध्यम से विश्वविद्यालय ने सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः प्रदर्शित किया तथा शिक्षा के साथ–साथ समाज सेवा के मूल्यों को भी सुदृढ़ करने का प्रयास किया।

अपराजिता की लता

–प्रवीण कुमार मद्धेशिया

नीले–नीले फूल खिले हैं,
अपराजिता की डाली पर।
मंद पवन जब छूकर जाता,
मुस्काए वह हरियाली पर।
कोमल पत्ते, सुंदर काया,
प्रकृति का अनुपम उपहार।
आँगन, बगिया, घर की शोभा,
बिखराए यह प्रेम अपार।
सूरज की किरणें पाकर,
और निखरता इसका रूप।
मानो धरती पर उतरी हो,
नीले रंग की प्यारी धूप।
हार न माने, सदा बढ़े यह,
नाम के जैसा इसका मान।
अपराजिता हमें सिखलाती,
रखना जीवन में सम्मान।
रंग और सरलता से,
भर देती हर मन में प्रीत।
अपराजिता की यह महिमा,
गाती रहती प्रकृति गीत।

(शोध छात्र, जैव–प्रौद्योगिकी विभाग)

नम्बरदार का पट्टा

(लोककथा)

एक सियार को एक दिन घूर पर पड़ा हुआ एक कागज का टुकड़ा मिल गया। उसने बुद्धि भिड़ायी। साथी सभी सियारों से कहा–

'देखो, मुझे इस इलाके का पट्टा मिल गया है। इसलिये आज से मैं इस पूरे इलाके का मालिक हूँ। कोई भी किसी चीज को मेरी अनुमति के बिना हाथ नहीं लगायेगा। मैं अब तुम लोगों का नम्बरदार हूँ।'

सियार विचारे अपढ़! सो सबने मान लिया। अब स्थिति यह थी कि कहीं पर कुछ भी करना होता तो पहले नम्बरदार उसका उपयोग और उपभोग करते, बाद में बचा–खुचा दूसरों के हाथ आता। नम्बरदार के दिन मजे में गुजरने लगे। बाकी ने भी किसी तरह अपनी नियति से समझौता कर ही लिया।

एक दिन एक बेर के पेड़ के पास सारे सियार एकत्र थे। सब दूर से ताक रहे थे और नम्बरदार मौज से पके–पके बेर खा रहे थे। एकाध बेर जो अच्छा नहीं लगता, वह साथियों को भी देते जाते। अचानक कुत्तों का एक झुण्ड कहीं से उमड़ पड़ा। सब सियार भागने लगे। नम्बरदार ने देखा तो वह भी अपनी जान बचाने को भागे। उन्हें भी भागता देखकर शेष सियारों ने अचरज से कहा–

'अरे, नम्बरदार! तुम क्यों भाग रहे हो? तुम्हारे पास तो पट्टा है। वह क्यों नहीं इन्हें दिखा देते?'

नम्बरदार ने कहा–

'अरे पट्टा तो पढ़े–लिखों के लिये है। वे समझेंगे, यह कुबड्डया (अनपढ़) उसे क्या समझें? इसलिये भाग रहे हैं।'

(प्रस्तुति–हरीशकुमार शर्मा)

(बुद्ध प्रसंग–चर्या पिटक)

चन्द्र कुमार चरित (दान पारमिता)

और फिर जब मैं पुष्पवती (नाम के) नगर में चन्द्र शुभ्र (नामक) एक राजा का पुत्र हुआ ॥१॥

तब मैं यज्ञ से मुक्त होकर, यज्ञ मार्ग से निकलकर (यज्ञ का मार्ग छोड़कर) संवेष उत्पन्न करके महादान में प्रवृत्त हुआ ।॥२॥

में दाक्षिणेयो (पुरुषों) को बिना दान दिए पाँच–छह रात्रि तक न पीता था. न खाता था और न भोजन करता था ॥३॥

जिस प्रकार व्यापारी सामान एकत्र कर जहाँ अधिक लाभ होता है, वहाँ सामान को ले जाता है ।।४।।

उसी प्रकार स्वयं भोगने से दान देने का फल अधिक महान् होता है। इस कारण दूसरों को दान देना चाहिए। (दिया हुआ दान) सौ गुना हो जायेगा । ४।।

गीत

यह कौन गिन रहा बैठा तारे?
सोये स्वप्नों में खोये सब,
यह बैठा क्यों जाग रहा तब?
क्या चिन्ता, क्या दुःख है इसको, बैठा पलक पसारे?
यह कान गिन रहा बैठा तारे ?
नींद नहीं इसके नयनो में,
यह जाग्रत खोया स्वप्नों में!
बिन सोये ही स्वप्न देखता मधुर जगत से न्यारे!
यह कौन गिन रहा बैठा तारे?
सब सोये यह भी सो जाये,
सोये जग को कौन जगाये?
इसे जागना ही होगा, जग को, निज नींद बिसारे!
यह कौन गिन रहा बैठा तारे!

–पराया